REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

आंतकवाद और उग्रवाद वर्तमान समय की चुनौती तथा संघर्ष :

Dr. Reeta kr. Sharma[1] and Juin Banerjee[2]
[1]HOD Department of Philosophy, S.S.L.N.T.M.M. Dhanbad.
[2]Research Scholar , Jharkhand Rai University.

सारांश –

भारत एक विकसित देश है जिसने पूर्व और वर्तमान में बहुत सारी चुनौतियों का सामना किया है, आतंकवाद उनमे से एक बडी राष्ट्रीय समस्या है। भारत ने भूखमरी से होने वाली मृत्यु, अशिक्षा, गरीबी, असमानता, जनसंख्या विस्फोट और आतंकवाद जैसी चुनौतियों का सामना किया है जिसने इसकी विकास और वृद्धि को बुरी तरह प्रभावित किया है। आतंकवादियों के धर्म, मातृभूमि और दूसरे गैर-तार्किक भावनाओं के उद्येश्यों के लिए आम लोगों और सरकार से लड रहा आतंकवाद एक बडा खतरा है। आतंकवाद के कुछ हालिया उदाहरण अमेरिका का ९/११ और भारत का २६/११ हमला है। आधुनिक समय में आतंकवाद की जो गंभीर स्थिति विद्यमान है उसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी है। देश की वर्तमान समय की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सास्कृतिक, धार्मिक, कानूनी न्यायिक और पुलिस एवं प्रशासनिक व्यवस्था ऐसी है जो आतकंवाद के जन्म का कारण है।

हमारे देश में सदियों से अन्याय और शोषण चला आ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति एवं नवीन संविधान लागू होने के पश्चात् भी इसमें कोई कमी नहीं आई है। अनेक राज्यों में भूमिहीन श्रमिकों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया है। भूमि सुधार कानूनों का न लागू होना नक्सलवादी आतंकवाद का ही एक रूप है। नवयुवकों में तीव्र असंतोष की प्रवृति भी देश में आतंकवादी प्रवृति को बढावा देती है। संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान आपाधापी, शिक्षित बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याओं ने नवयुवकों में तीव्र असंतोष पैदा कर दिया है। और इस प्रकार वे अवैध कार्यो में संलिप्त हो जाते है जिसका सीधा संबंध आतंकवादियों से होता है।

परिचय–

आज सम्पूर्ण विश्व उग्रवाद तथा आतंकवादी गतिविधियों से चिंतित है पूरे विश्व में चाहे वह विकसित देश हो, विकासशील देश हो या अविकसित देश हो सभी जगह आतंकवाद किसी न किसी रूप में अपना जाल फैला रहा है। भारत में भी इसने अपनी जडे फैला रखी है। भारत विश्व के अनेकता में एकता के लिए जाना जाता है इस विशाल देश में अनेक धर्म, भाषाएँ और जातियाँ होते हुए भी यह एक ऐसे सांस्कृतिक सूत्र में बंधा है, जिसकी उदाहरण कहीं और नहीं मिलता, लेकिन आतंकवाद ने हमारे देश और उसकी अखण्डता के सामने नई-नई चुनौतियाँ पेश की है अगर हम इससे लड सके तो एक विश्व शक्ति बनने के सपने को साकार कर सकेंगें, आतंकवाद एक ऐसा विषय है जिसकी चर्चा आम हो गई है, विश्व या देश में कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब कहीं न कहीं आतंकवादी वारदात न हो अब समय आ गया है कि इस समस्या के बारे में हम सब गहराई में जाकर अध्ययन करें। आतंकवाद हिंसा में उत्पन्न हुई है और हिंसा का मूल मानव-मन है। सच तो यह है कि आतंकवाद मानव जितना ही पुराना है। आतंकवाद की उत्पत्ति को देखे तो पाते है कि यह कई रूपों में

कभी-न-कभी मौजूद रहा है। जब रावण सीता को उठाकर ले गया, पाण्डवों को गृह में जलाने की योजना बनी, अंग्रेजो द्वारा भारतीयों पर दमन हिटलर द्वारा किया गया नरसंहार, भारतीय संदर्भ में निचली जातियों, आदिवासियों स्त्रियों और मजदूरों के साथ तरह-तरह के क्रूर अपराध और शोषण आदि आतंकवाद के रूप में नहीं थे, तो क्या थे?

आतंकवाद को एक परिभाषा में बांधा नहीं जा सकता है विभिन्न विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत है। आतंकवाद के संबंध में विद्वान स्टीफन के अनुसार -''हर आतंकवादी कार्यवाही की जड में कोई उद्देश्य, कोई राजनीतिक लक्ष्य रहता है उसमें अन्याय की या आजादी के हनन की आशंका दबी रहती है, ये बातें आतंकवादी के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी किसी प्रधानमंत्री के लिए। कोई भी राजनीतिक सोच इस तथ्य पर पर्दा नहीं डाल सकती। आतंकवाद के किसी भी विरोधी को यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि आतंकवाद प्रतिक्रिया का एक ऐसा ज्वालामुखी है जिसकी उत्पत्ति चाहे बडी देश से हो, पर इतना दबाव बन चुका होता है कि इस रोकना प्रकृति के नियम बदलने जैसा है, कई बार ऐसा देखा जाता है कि हनन और समस्या न होने पर भी अपनी व्यक्तिगत या राजनीतिक अपेक्षाओं की पूर्ति लोकतांत्रिक तरीके से न होने पर राजनीतिक असंतोष पनपता है और आतंकवाद का रास्ता और आसान तरीके सुझता है, जो एक भ्रममात्र ही नहीं बल्कि सच्चाई है, इसलिए कहा गया है कि आतंकवाद अन्याय के विरूद्ध प्रतिक्रिया है तथा तनाव, असंतोष को कम करने का एकमात्र साधन है, इसलिए कहा जा सकता है कि जहाँ अन्याय होगा, शोषण होगा, समस्याओं की अनदेखी होगी वहीं आतंकवाद की उत्पत्ति होगी और यह तेजी से फैलेगा। आतंक फैलाने तथा मनोवैज्ञानिक युद्ध की स्थिति निर्मित करने की तकनीक ही आतंकवाद है।

आतंकवाद की उत्पत्ति एवं इतिहास

आतंकवाद के इतिहास को तारीखों और सालों में बांधना संभव नहीं है आतंकवाद पर विचार करते समय हम देखते है कि यह कई रूपों में हमेशा मौजूद रहा है। चाहे वह राम युग हो, कृष्ण युग हो, मुगल शासन युग हो या अंग्रेजी शासन काल हो, यहाँ तक ही हिटलर का तो कोई जवाब ही नहीं, वर्तमान में तो आतंकवाद का कोई हद ही नहीं रह गया है।

आतंकवाद की उत्पत्ति का बीज हिंसा में है। आतंकवाद एक योजनाबद्ध तरीका है। वर्तमान आतंकवाद की शुरूआत २२ जूलाई १९६८ को हुई जब पहला जेट एयरलाईन्स अगवा किया १३ सितम्बर १९७० को पी०एफ०एल०पी० के आतंकवादियों ने जार्डन के हवाई अड्डे पर तीन हवाई जहाजों को उडा कर धमाके किये वहीं से आतंकवाद की शुरूआत हुई थी। हॉलैण्ड में मालूकान हाईजौकिन, १९४८ में जर्मनी के फैकर्फुत में एक आर्मी डिपो में विस्फोट, १९७२ में म्यूनिख ओलिम्पक में ईजराईली खिलोडियों पर जानलेवा हमला, १९७६ में बेरूज से तुर्की दुतावास में प्रथम सचिव की हत्या, १९७२ का खूनी रविवार जिसमे दर्जन भर ब्रिटिश सिपाही मारे गये। पाकिस्तान द्वारा भारतीय विमान का अपहरण कर लाहौर हवाई अड्डे पर चालक सहित आग लगाना ये सभी घटनाएँ जिन्होगें दुनियाँ का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। आतंकवाद को एक हथिहार के तौर पर मानना और उसकी वकालत की उनमें फ्रांसिसी क्रांति की सूत्रधार, रूसी क्रांति के नेता, जर्मन समाज शास्त्री बिल हेम वेटिंग, हिटलर, यासिर अरफात और कर्नल गदा जी का नाम अग्रणीय है।

आतंकवाद के आधुनिक इतिहास को तीन भागों में बांट कर देखा जा सकता है (१) प्रथम विश्वयुद्ध (२) द्वितीय विश्वयुद्ध (३) सोवियत रूस का विघटन। प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बीच के समय में आतंकवाद को अच्छी खासी मान्यता मिलनी शुरू हो गयी थी निरकुशों, शासकों तानाशाहों और उपनिवेशो की जहाँ एक तरफ तुती बोल रही थी वहीं दूसरी ओर उसके खिलाफ संघर्ष भी शुरू हो गये थे और आतंकवाद को एक कारगर शस्त्र के रूप में खूब उपयोग हो रहा था।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आंतकवाद के इतिहास में एक अनोखा मोड था। सोवियत संघ का विघटन इससे अमेरिका एक महाशक्ति के रूप में उभरा। महाशक्तियों की दादागिरी में नया दौर शुरू किया। युद्ध की जगह आतंकवाद ने ले लिया। संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व भर में साम्यवाद के प्रभाव को बढाने से रोकने के लिए आतंकवादी संगठनों की सहायता करता रहा बढावा देता रहा। १९७९ में

सोवियत संघ ने अफगानिस्तान पर अपना अधिकार कर लिया और आतंकवादी नवयुवकों ने सोवियत संघ के विरूद्ध लडने का निर्णय लिया ओसामा बिन लादेन उनमे से एक था। जिसने सितम्बर २००१ में संयुक्त राज्य अमेरिका के शहर न्यूयार्क में ''वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर'' पर आतंकवादी हमला कर हजारो लोग मारे गये तथा करोडो डॉलर की सम्पति नष्ट हुई। इसके बाद लगातार सभी देश आतंकवाद की गिरफ्त में आते जा रहे हैं। इसे रोकने में असमर्थ है केवल दोषारोपण और भाषण तक ही सीमित होने जा रही है। महाशक्तियों भी इनके आगे विवश होती जा रही है। हाल में ही २००८ में मुम्बई में ताज तथा ओवेराय होटलों पर आतंकवादी हमले जिसमें अनेकों जान गई अनेक जवान शहीद हुए। हम केवल इन आतंकवादी हमलों को याद करते है उसे रोकने के कारगर कदम नहीं उठा रहे है।

आतंकवाद की विशेषताएँ

१. यह कुछ गिने-चुने लोगों द्वारा संगठित, नियोजित तथा जानबुझ कर किया जाने वाला हिंसात्मक कार्य है।
२. यह एक राजनीति से प्रेरित हिंसा है जिसका एक उद्देश्य वर्तमान शासन व्यवस्था को उखाड फेंकना है।
३. यह अपनी मांगे मनवाने के लिए तथा मानसिक दबाव बनाए रखने के लिए हिंसा का प्रयोग करता है।
४. इसका निशाना नागरिक अथवा कोई विशेष समुदाय अथवा सशस्त्र सैनिक या सरकार अथवा राज्य होते है।
५. यह हमेशा गैर-सरकारी अमानवीय तथा लोकतंत्र विरोधी होते है।

आंतकवाद और भारत

स्वतंत्रता आन्दोलन में यह विचारधारा दो भागों में विभक्त हो गई। एक विचारधारा अहिंसा जिसके पक्षधर गाँधी जी और अन्य नेता थे इसके विपरीत सुभाष चन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि क्रांतिकारी नेता थे। इनके सोच गुरू गोविन्द सिंह की सोच से मेल रखते थे। आतंक और राज्यतंत्र पर प्रजातंत्र की विजय हुई। गुरू गोविन्द सिंह की विचारधारा ने जंगलों और आदिवासी इलाकों तक में चिंगारी जग चुकी थी। तिलका मांझी जैसे महान शहीद नेता इसका नेतृत्व कर रहे थे।

स्वतंत्र भारत में जो आतंकवादी व्यवहार पनप रहा है वह राष्ट्र में व्याप्त असमानताओं का परिणाम है जो दिन प्रतिदिन प्रगति कर रहा है। एक तरफ पंजाब में खडकु, दक्षिण में लिट्टे, उत्तर-पूर्व में इसाई धर्मावलम्बी, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश में नक्सली गतिविधियाँ निरन्तर बढती जा रही है। वही दूसरी तरफ अप्रचारित आतंकवादी गतिविधियाँ है जो उच्चवर्ग समुदायों द्वारा निम्न वर्ग समूहों का शोषण कर उनको गाँव-गाँव में भयभीत कर आतंक के वातावरण में रहने के लिए मजबूर करती है। भारत की विभिन्नताएँ और यहाँ के इकाई इलाके आंतकवादियों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा करते है। वर्तमान समय में सच्चाई है कि आतंकवाद तथा उग्रवाद को जड से समाप्त करना एक दुष्कर कार्य होते जा रहा है सभी प्रयास व्यर्थ हो रहे है।

आतंकवाद के कुछ मुख्य कारण

१. शोषण और अन्याय की प्रकृति।
२. नवयुवक वर्ग में तीव्र असंतोष।
३. अवैध शास्त्रों का आसानी से मिलना।
४. दलीय राजनीतिक, चुनावी राजनीतिक तथा शासक दल द्वारा सरकारी तंत्र का दुरूपयोग।
५. आर्थिक क्षेत्र में संतुलित विकास का अभाव।
६. आतकंवादियों को विदेशों से प्राप्त भारी सहायता और प्रोत्साहन।

आतंकवाद को रोकने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना जरूरी है।

१. सभी राष्ट्रीय समस्याओं पर आम सहमति बनाए जाय। राजनीतिक दलों का दलीय राजनीति से उपर उठकर समस्याओं के समाधान में सरकार का सहयोग करना होगा।
२. पुलिस और सुरक्षा बलों का आधुनिकीकरण करना अनिवार्य हो गया है, क्योंकि आतंकवादी के पास अत्याधुनिक हथियार उपलब्ध है।
३. आतंकवादी से निपटने के लिए सख्त कानून बनना और उसे सख्ती से लागू करना होगा। २००२ में इसी के अन्तर्गत ''पोटा'' पास किया गया है।
४. भूमि सुधार कानूनों की त्रुटियो को दूर करना ताकि नागरिकों को सामाजिक न्याय मिल सके।
५. आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सरकार तथा जनता के बीच सहयोग स्थापित होना जरूरी है।
६. आतंकवाद के विरूद्ध विश्वजनमत गठित किया जाए, जो देश आतंकवाद का समर्थन कर रहे हैं उन पर ऐसा न करने के लिए दबाव डाला जाए। सहायता करने वाले देशों से संबंध समाप्त किए जाए, सहयोग ओर सहायता बंद की जाय।
७. जिन देशों में अलग-अलग जातियों तथा धर्मो के मानने वाले लोग रहते है वहीं लोगों में सहयोग तथा भाईचारे की भावना स्थापित करने के लिए कदम उठाए जाए।
८. मीडिया को भी अपनी भूमिका में संशोधन करने की आवश्यता है, मीडिया इनके लिए वरदान साबित होते है। इन उपायों द्वारा आतंकवाद तथा उग्रवाद को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। क्योंकि समाप्त करना संभव नहीं किसी भी प्रयत्न से सभी को संतुष्ट नहीं किया जा सकता है।

निष्कर्ष :-

स्पष्ट है कि पूरे विश्व के लिए आतंकवाद एक राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय समस्या बन चुका है, ये एक वैश्विक समस्या है जिसने लगभग सभी राष्ट्रों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। हालांकि बहुत सारे देशों के द्वारा आतंकवाद का सामना करने की कोशिश की जा रही है लेकिन कुछ देशों द्वारा अभी भी समर्थन दिया जा रहा है।

आतंकी समूह को खत्म करने के साथ ही आतंक के खिलाफ लडने के लिए हर साल हमारा देश करोंडो व्यय करता है। हालांकि ये अभी - भी एक बिमारी की तरह बढ रही है क्योंकि रोजाना नये आतंकवादी तैयार हो रहे है। वो हमारी तरह ही बहुत सामान्य लोग ही लेकिन उन्हें अन्याय करने के लिए तैयार किया जाता है और अपने समाज, परिवार और देश के खिलाफ लडने के लिए दवाब बनाया जाता है। वो इस तरह से प्रशिक्षित होते है कि उन्हें अपने जीवन से भी प्यार नहीं होता, वो कुर्बान होने के लिए तैयार रहते है। एक भारतीय नागरिक के रूप में आतंकवाद को रोकने के लिए हम सभी पूरी तरह से जिम्मेदार है और ये तभी रूकेगा जब हम सरकार द्वारा चलाए जा रहे आतंकवाद निरोधी उपायों में अपना हरसंभव सहयोग देंगें।

संदर्भ सूची

कुरूक्षेत्र - वर्ष	-	२००५, मार्च २००८, २००६
झारखण्ड परिदृश्य	-	डॉ० सुनील कुमार सिंह
प्रतियोगिता दर्पण	-	जनवरी, २०१०
अजीत कुमार	-	बिहार में नक्सलवादी आन्दोलन का इतिहास
सक्सेना विवेक	-	नक्सली आतंकवाद, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली-२००८
वर्मा, लाल बहादुर	-	आतंक, आतंकवादी और आतंकवाद, इतिहास बोध, इलाहाबाद
दैनिक प्रकाशन	-	प्रभात खबर, हिन्दुस्तान